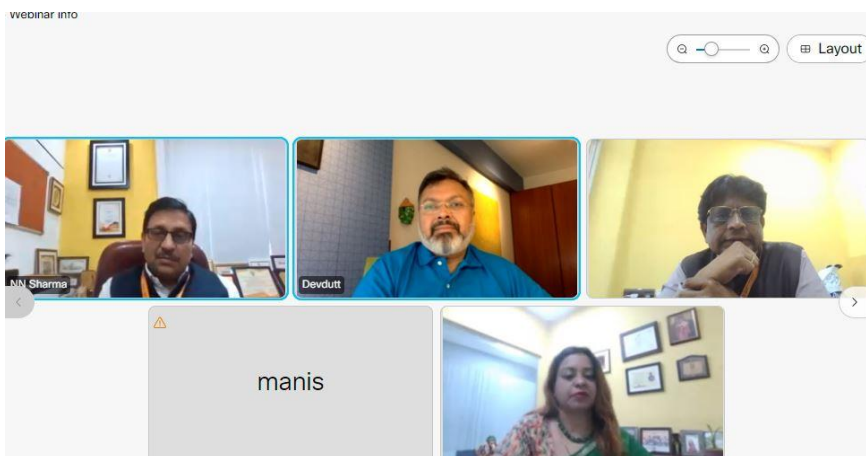
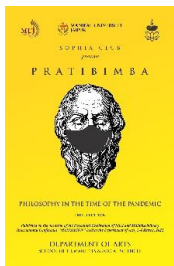


The **International Conference on Multidisciplinary Trends in Social Sciences and Humanities** was organized in the virtual mode by the Department of Arts, Manipal University Jaipur, SSSH from 2 march to 4 march, 2022. This conference was a platform for researchers to present the latest research in interdisciplinary concerns of Arts, Science, and Humanities. The inaugural program of the conference was graced by the presence dignitaries from Manipal University Jaipur and the chief guest was Sh. Devdutt Pattanaik, celebrity author and mythologist. After a musical inaugural with the Kulgeet of MUJ, and the warm welcome address by Dr Richa Arora, Director SHSS, Dr Mani Sachdev, Hod, Arts elucidated on the context of philosophy in the contemporary times. The pro-president Dr. NN Sharma in his speech recounted the beginnings of the Manipal education group and welcomed the chief guest. In his inaugural address, Sh. Devdutt Pattanaik explained the importance of understanding Indian philosophical concepts in a way to live life in peace and harmony. The event received widespread coverage in both the print and the television media. After this Dr Anthony S Raj , professor of philosophy, Dept of Arts introduced the Sophia club and the special Issue of “*Pratibimb*,” the journal published by the club was launched during the event.

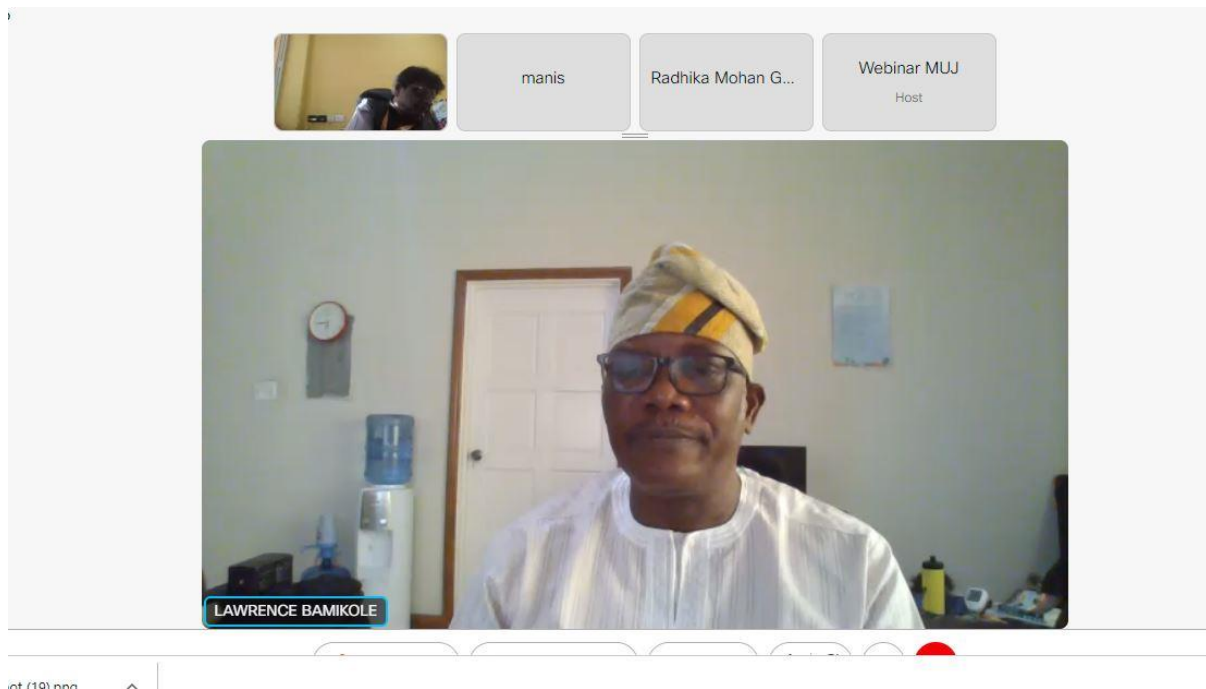


The theoretical sessions and themes of conference were based on the centrality of the human condition in the contemporary world as all disciplines tried to make sense of who human

beings are and how one makes sense of these precarious conditions of life. Asking these crucial questions becomes imperative in a fast-changing world where knowledge has become multifaceted and multi-perspectival. Sessions were chaired by eminent academicians who provided valuable feedback to the presenters on their research. The conference gave an opportunity to all the participants to share their research and get feedback, to interact with colleagues from the field and provided a chance to listen to academic stalwarts in the plenary sessions.

The plenary sessions saw many international speakers.

International speakers such as Prof Lawrence Bamikole from The University of the West Indies, spoke on the topic “*Philosophy, Transversal Thinking and Covid-19 Pandemic.*”



Prof. Daniel Raveh, from the Department of Philosophy, Tel Aviv University, Israel, gave an insight into Professor Dayakrishna’s work from various perspectives by speaking on “*Daya Krishna: A Philosophical Retrospective.*”

Dr. Kashif Zia Oman from the Department of Computing and Information Technology, Sohar University Oman shared his expertise with the attendees on the use of computational methods in humanities and social sciences through his lecture on “*Humanities Analytics: An Overview.*”

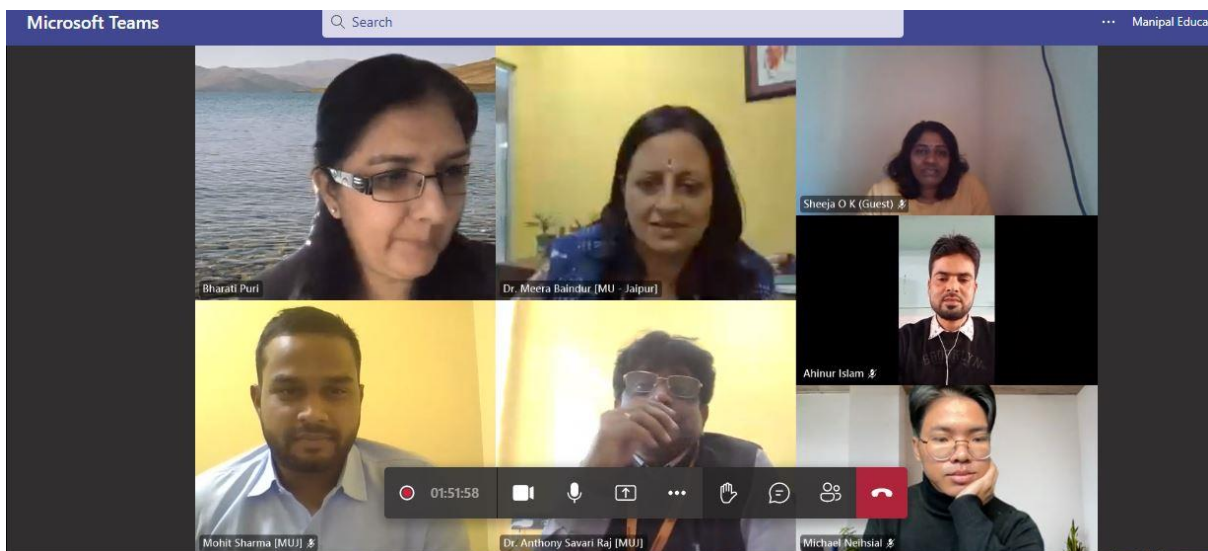
A special event on regional language was organized in the conference to encourage scholarship in the local region. A plenary in Hindi by Dr. Sushim Dubey Professor, Department of Philosophy Nav Nalanda Mahavihara, was also well received.

He spoke about the divergence of philosophy and its relevance in the context to the current scenario.

The sessions were on the following topics:

Precarity: Environmental Ethics, Agrarian crisis, and Technology

Chairperson: Dr. Bharti Puri, IIT Delhi

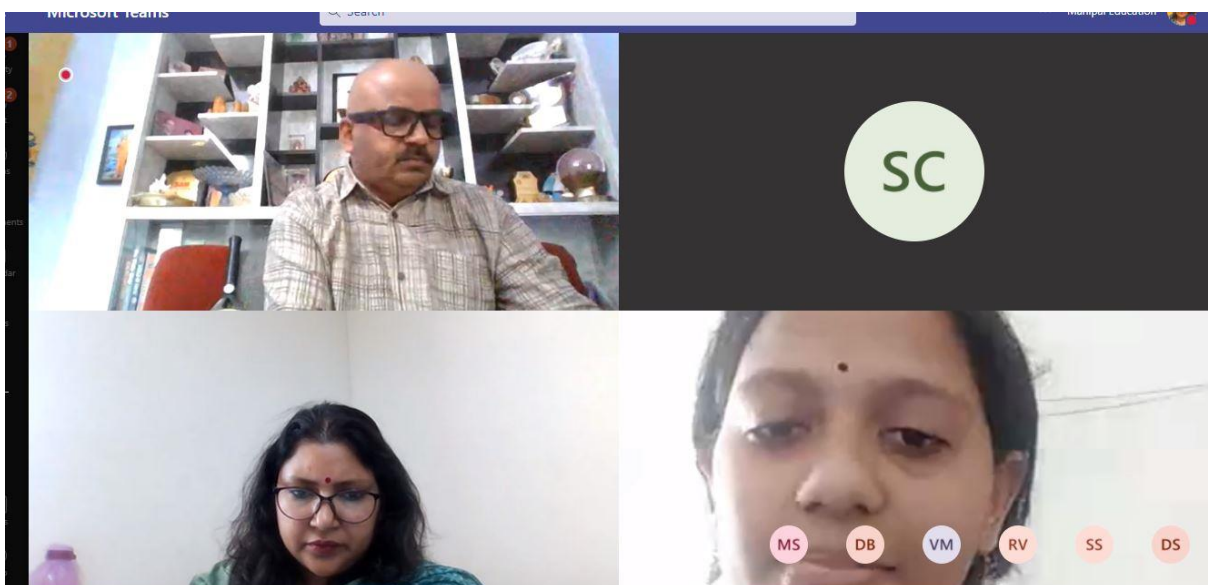


Philosophical Deliberations and Theorizing performance

Chair person: Dr. Srinivas Kumar Acharya, Head of the Department of Philosophy, MAHE

Mapping the Human Tapestry in Cultural texts

Chairperson: **Dr. J.S Dubey, Professor of philosophy, Hamidia College Bhopal**



Philosophy of Religion and Faith Practices

Chairperson: Dr. Asha Mukherjee, Visva-Bharati, Central University, Santiniketan

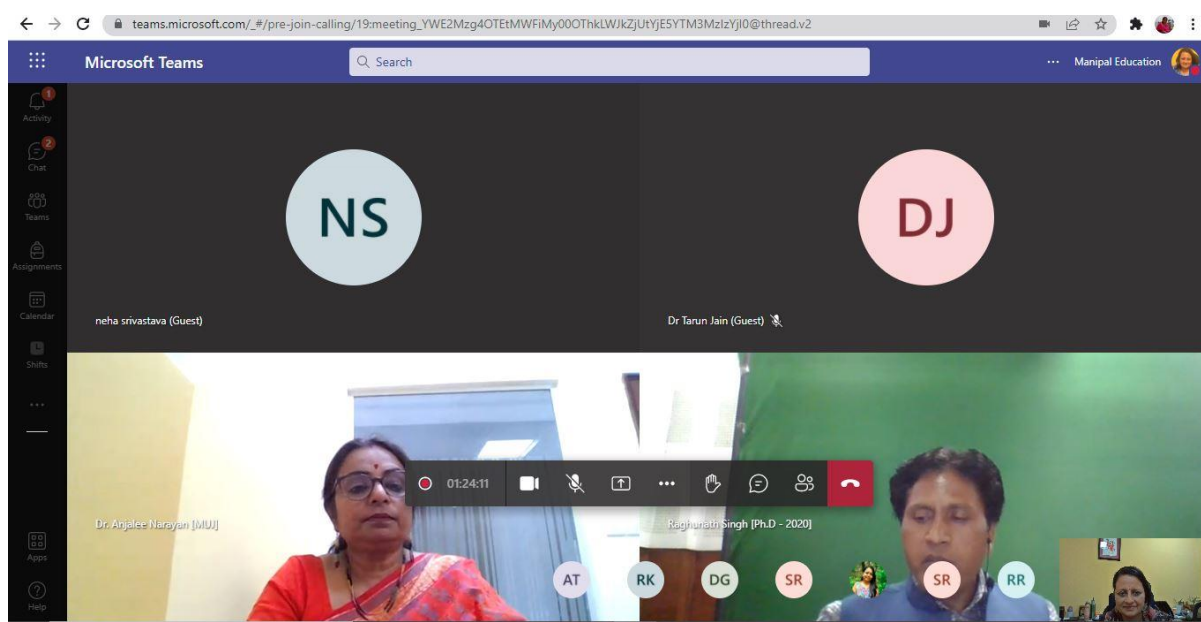


Diversity, Inclusivity, and Power

Chairperson: Dr. Namita Nimbalkar

Department of Philosophy, University of Mumbai

The Hindi technical session saw papers on social media, philosophy, yoga, and mental wellness and so on.



Chairperson Indian Council For Philosophical Research who suggested that creativity, and critical thinking should come together in research. He suggested that as Indians we must also pay attention to Subaltern studies in Humanities. The participants shared that the conference had helped them to get a overview of the latest research in Humanities and Social Sciences.

The print and electronic media also covered it extensively.

—PHOTOS BY MUKESH KIRADOO

INTERNATIONAL CONFERENCE

CITY FIRST

An International Conference on 'Multidisciplinary Trends in Social Sciences and Humanities' was organised by the Department of Arts, School of Humanities and Social Sciences, Manipal University Jaipur. The Chief Guest of the conference was Dr Devdutt Patnaik, the eminent orator and scholar of religious narratives. Dr Patnaik gave a scientific explanation of Indian theology. The Pro President of the University said that today scholars like Dr Patnaik are doing



a complex task of making the new generation aware of Indian traditions. Dr Mani Sachdev, Head, Department of Arts told the importance of Humanities and Social Sciences in the present context. Sophia Club's magazine 'Pratibimb' was released on this occasion.



GOLDEN 50 YEARS

चार लेज यूके है।

मौणा, बैठक में यह निर्णय भी लिया गया कि कार्यकारिणी के अन्य सदस्यों का मनोनयन संगठन के नवनियुक्त पदाधिकारियों की शीघ्र ही आयोजित होने वाली बैठक में किया जाएगा।

सदस्यता अभियान चलाया जा रहा है तथा पहली बार बुकलेट से सदस्य बनाने के साथ ही डिजिटल माध्यम से सदस्य जुड़े जाने का अभियान प्रारम्भ हुआ है। डिजिटल सदस्यता अभियान से प्राप्त डाटा की सहायता से

सदस्यता अपन-अपन दायित्व को पूर्ण करने के लिए क्षेत्रों में निकल जाए तथा अधिक से अधिक लोगों को कांग्रेस का सदस्य बनाकर देश में सर्वाधिक कांग्रेस सदस्य जोड़ने वाला प्रदेश राजस्थान बने इसके लिए कमर कसकर जुट जाए।

मणिपाल विश्वविद्यालय जयपुर में बहु विषयक रुझान पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन

जयपुर, समाचार जगत न्यूज। मणिपाल विश्वविद्यालय जयपुर के कला विभाग, मानविकी और सामाजिक विज्ञान स्कूल द्वारा 'सामाजिक विज्ञान और मानविकी में बहु विषयक रुझान' पर एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया। सम्मेलन के मुख्य अतिथि धार्मिक कथाओं के प्रख्यात वक्ता एवं विद्वान डॉ. देवदत्त पटनायक थे। डॉ. पटनायक ने भारतीय धर्म शास्त्र की वैज्ञानिक व्याख्या की। उन्होंने बताया कि यज्ञ धार्मिक ही नहीं वैज्ञानिक प्रक्रिया है। अंग्रेजों ने इसका अनुवाद



करते समय इसे 'सैक्रिफाइस' कर दिया जो कि इसका सही अर्थ नहीं है।

हमारे आख्यानो में यज्ञ का अर्थ प्रतिदान देना है। प्रकृति हमें सब कुछ देती है इसके प्रति दान में हम उसे यज्ञ अर्पित करते हैं। जब यह प्रतिदान नहीं दिया जाता है तो यह अधर्म बन जाता है। वर्तमान संदर्भ में हमें यह समझना होगा कि हमें अपने धार्मिक मीमांसाओं के लिए अधिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाना होगा। अध्यक्षीय भाषण देते हुए विश्वविद्यालय के प्रो. प्रेसिडेंट डॉ. एन एन शर्मा ने कहा कि आज डॉ. पटनायक जैसे विद्वान नई पीढ़ी को भारतीय परंपराओं से अवगत कराने का एक जटिल कार्य कर रहे हैं।

कार्यक्रम की शुरुआत में स्कूल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंसेज की निदेशक डॉ. ऋचा अरोड़ा ने सभी का स्वागत किया। डॉ. मोरा बंदूर ने सम्मेलन की रूपरेखा से अवगत कराया। कला विभाग की अध्यक्ष डॉ. मणि सचदेव ने वर्तमान संदर्भ में मानविकी और सामाजिक विज्ञान के महत्व को बताया। इस मौके पर सोफिया क्लब की पत्रिका 'प्रतिबिंब' का विमोचन किया गया। प्रोफेसर एंथोनी सेवरी राज ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा। इस कार्यक्रम का संचालन डॉ. राधिका मोहन गुप्ता ने किया।

ए योजना से जुड़े निजी अस्पतालों में बन रही हैल्प-डैस्क

इलाज और रेफरल में दे रहे सहायता राज्य स्तर पर आज दिया गया प्रशिक्षण

जीएस स्वामी

क्या
बारे
शर्मा,

म 12 व 13 मार्च को आयोजित होने वाले जेएचएफ की बेहतर जीवन शैली पर चर्चा और व्याख्या करने के लिए इस उत्सव का आयोजन किया जा रहा है। कार्यक्रम में एक हजार से अधिक चिकित्सक भाग लेंगे।

मणिपाल विवि में 'सामाजिक विज्ञान व बहु विषयक रुझान' पर हुआ सम्मेलन

जयपुर | मणिपाल विश्वविद्यालय के कला विभाग, मानविकी और सामाजिक विज्ञान स्कूल की ओर



से 'सामाजिक विज्ञान और मानविकी में बहु विषयक रुझान' पर एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया।

सम्मेलन के मुख्य अतिथि विद्वान डॉ. देवदत्त पटनायक रहे। विश्वविद्यालय के प्रो. प्रेसिडेंट डॉ. एन एन शर्मा ने

कहा कि आज डॉ. पटनायक जैसे विद्वान नई पीढ़ी को भारतीय परंपराओं से अवगत कराने का एक जटिल कार्य कर रहे हैं। कार्यक्रम की शुरुआत में स्कूल आफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंसेज की निदेशक डॉ. ऋचा अरोड़ा व डॉ. मीरा बेंदूर ने सम्मेलन की रूपरेखा से अवगत कराया। कला विभाग की अध्यक्ष डॉ. मणि सचदेव ने वर्तमान संदर्भ में मानविकी और सामाजिक विज्ञान के महत्व को बताया। इस मौके पर सोफिया क्लब की पत्रिका 'प्रतिबिंब' का विमोचन किया गया।

शर्मा ने विद्वाली पौटल राजा

जयपुर | लॉयन्स व रीजन कॉन्फ्रेंस में कुमार जैन पांडया और लॉयन मृदुला क्लब जयपुर मेट्रो के रूप में चुना ग जयपुर मेट्रो को बेस गया। इस मौके धीरेन्द्र मित्र, धीरे गवर्नर सुनील गो लॉयन रोशन से लॉयन गोविंद श

हेमलता अग्र

जयपुर | अंतरराष्ट्री महिला ईकाई वै



दिव्या गुप्ता को राठी कोषाध्य सहा कोषाध्यक्ष

जयपुर र आदित्य

है। हिंदू एकता के लिए सर्व समाज हिंदू र्य कर रही है।

पूर्व महामंडलेश्वर बालमुकुंदाचार्य के भजनों की प्रस्तुतियां हुईं। वाल्मीकि शहर सत्संग अध्यक्ष छगन डंडोरिया, वाल्मीकि पंच कमेटी के सरपंच मनोज

सिंह सूरी, राजेश चौहान, चंद्रप्रकाश खेतानी, राजकुमार पलाड़िया, सुमेर सिंह, रणजीत सिंह सोडाला, रजत विश्नोई, जय आहूजा, अजय यादव, सुनील दत्त शर्मा, रामअंवतार जयसवाल, सुनील जैन, शंकर शर्मा, पीयूष अग्रवाल, कैप्टन लवेश गोयल, सुमित अग्रवाल, गोपाल शर्मा सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

सामाजिक विज्ञान और मानविकी में बहु विषयक रुझान पर सम्मेलन

डॉ. पटनायक ने की भारतीय धर्मशास्त्र की वैज्ञानिक व्याख्या

महानगर संवाददाता

शिक्षित कथा से रयाम धन हो सुखी सके मन सुखी कहा और बसे गील गीरी गप्त

जयपुर। मणिपाल विश्वविद्यालय के कला विभाग, मानविकी और सामाजिक विज्ञान स्कूल द्वारा 'सामाजिक विज्ञान और मानविकी में बहु विषयक रुझान' पर एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया। सम्मेलन के मुख्य अतिथि धार्मिक कथाओं के प्रख्यात वक्ता वं विद्वान डॉ. देवदत्त पटनायक थे। डॉ. पटनायक ने भारतीय धर्म शास्त्र की वैज्ञानिक व्याख्या की। उन्होंने बताया कि यज्ञ धार्मिक ही नहीं वैज्ञानिक प्रक्रिया है। अंग्रेजों ने इसका अनुवाद करते समय इसे 'सैक्रिफाइस' कर दिया जो कि इसका सही अर्थ नहीं है। हमारे आख्यानों में यज्ञ का अर्थ प्रतिदान देना है। प्रकृति हमें सब कुछ देती है इसके प्रति दान में हम उसे यज्ञ अर्पित करते हैं। जब यह



प्रतिदान नहीं दिया जाता है तो यह अधर्म बन जाता है। वर्तमान संदर्भ में हमें यह समझना होगा कि हमें अपने धार्मिक मीमांसाओं के लिए अधिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाना होगा।

जयपुर। डि... मुंबई से रजनी भ... सत्र में 'परीक्षाएं... मुद्दे पर बच्चों... बच्चे ऑनलाइन... रूप में जुड़ सकें... बाल मेला के स... किया जाएगा।... में कई ऑनला... बाल मेला का... के लिए ऐसा... और उन्हें अधि... से यही ध्येय

राज... सट

जयपुर

बनने पर भ... प्रदेश माली... महासभा... पदाधिकारि... कर इस... लिए मुख्य... गहलोत... जताया। इ... महासभा... बजरंग ला... सागर मा... सैनी, संत... माली का

सामाजिक विज्ञान और मानविकी में बहु-विषयक रुझान पर एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन

यज्ञ का अर्थ प्रतिदान देना है : डॉ. देवदत्त पटनायक

जयपुर @ पत्रिका. मणिपाल विश्वविद्यालय जयपुर के कला विभाग, मानविकी और सामाजिक विज्ञान स्कूल की ओर से सामाजिक विज्ञान और मानविकी में बहुविषयक रुझान पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि धार्मिक कथाओं के प्रख्यात वक्ता और विद्वान डॉ. देवदत्त पटनायक थे। डॉ. पटनायक

ने भारतीय धर्मशास्त्र की वैज्ञानिक व्याख्या की। उन्होंने बताया कि यज्ञ धार्मिक ही नहीं वैज्ञानिक प्रक्रिया है। हमारे आख्यान में, यज्ञ का अर्थ प्रतिदान देना है। प्रकृति हमें सब कुछ देती है, इसके प्रतिदान में हम उसे यज्ञ अर्पित करते हैं। जब यह प्रतिदान नहीं दिया जाता है, तो यह अधर्म बन जाता है। वर्तमान संदर्भ में हमें यह समझना होगा कि हमें अपने धार्मिक



मीमांसाओं के लिए अधिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाना होगा।

वहीं विश्वविद्यालय के प्रो. प्रेसिडेंट डॉ. एनएन शर्मा ने कहा कि डॉ. पटनायक जैसे विद्वान नई पीढ़ी को भारतीय परंपराओं से अवगत कराने का एक जटिल कार्य कर

रहे हैं। कार्यक्रम में स्कूल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंसेज की निदेशक डॉ. ऋचा अरोड़ा, डॉ. मीरा बैन्दूर, कला विभाग के अध्यक्ष डॉ. मणि सचदेव ने भी विचार व्यक्त किए। इस मौके पर सोफिया क्लब की पत्रिका प्रतिबिंब का विमोचन किया गया। कार्यक्रम में प्रोफेसर एंथोनी सेवरी राज, डॉ. राधिकामोहन गुप्ता भी मौजूद थे।

यज्ञ धार्मिक नहीं वैज्ञानिक प्रक्रिया

जयपुर, 3 मार्च (ब्यूरो): मणिपाल विश्वविद्यालय जयपुर के कला विभाग, मानविकी और सामाजिक विज्ञान स्कूल की ओर से 'सामाजिक विज्ञान और मानविकी में बहु विषयक रुझान' विषय पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया। सम्मेलन के मुख्य अतिथि धार्मिक कथाओं के प्रख्यात वक्ता डॉ. देवदत्त पटनायक थे। डॉ. पटनायक ने भारतीय धर्म शास्त्र की वैज्ञानिक व्याख्या की। उन्होंने बताया कि यज्ञ धार्मिक ही नहीं वैज्ञानिक प्रक्रिया है, अंग्रेजों ने इसका अनुवाद करते समय इसे सैक्रिफाइस कर दिया जो कि इसका सही अर्थ नहीं है। हमारे आख्यानो में यज्ञ का अर्थ प्रतिदान देना है। प्रकृति हमें सब कुछ देती है इसके प्रति दान में हम उसे यज्ञ अर्पित करते हैं, जब यह प्रतिदान नहीं दिया जाता है तो यह अधर्म बन जाता है। अध्यक्षीय भाषण देते हुए विश्वविद्यालय के प्रेसिडेंट डॉ. एनएन शर्मा ने कहा कि पटनायक जैसे विद्वान नई पीढ़ी को भारतीय परंपराओं से अवगत कराने का एक जटिल कार्य कर रहे हैं। कार्यक्रम में कला विभाग की अध्यक्ष डॉ. मणि सचदेव ने वर्तमान संदर्भ में मानविकी और सामाजिक विज्ञान के महत्व को बताया। इस मौके पर सोफिया क्लब की पत्रिका प्रतिबिंब का विमोचन किया गया।

स
प
ह
ने
व
उ
हैं
म
र
ब
घ
प
ग
ग
ब
ह
उ
ह
प
व

